

४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्थानोंमें जीवप्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् गति आदि चौदह मार्गणाओं व उनके भेद-प्रभेदोंमें जीवराशिका प्रमाण दिखलाया गया है और यहाँ प्रत्येक राशिका प्रमाण, भागाभाग और अल्पबहुत्व यथाक्रमसे समझाया गया हैं। जिस प्रकार गुणस्थानोंमें प्रथम मिथ्यादृष्टीके प्रमाण समझानेमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके दिखाया है, उसी प्रकार मार्गणास्थानोंमें प्रथम नरकगतिके प्रमाण प्ररूपणमें भी गणितविस्तार पाया जाता है।

(देखो पृ. १२१-२०५)

उक्त प्रमाण-विवेचन बड़ी सूक्ष्मता और गहराईके साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अंकसंदृष्टि कायम नहीं रखी, जिससे सामान्य पाठकोंको विषयका बोध होना सुगम नहीं हैं। अतएव हम यहाँपर उन सब मार्गणाओंकी पृथक् पृथक् प्रमाण-प्ररूपक अंकसंदृष्टियां आचार्यद्वारा कल्पित अंकोंके आधारसे बनानेका प्रयत्न करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्यात व संख्यातके भीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्थूल बोध कराना मात्र है। प्रत्येक मार्गणाके भीतर संपूर्ण जीवराशिका समुच्चय प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टीसे परीक्षण करने पर एक दूसरी मार्गणाओंकी अंकसंदृष्टियोंमें परस्पर वैषम्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीवराशिके लिये केवल १६ जैसी अल्प संख्या लेकर समस्त मार्गणाओंके प्रभेदोंको उदाहृत करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी विशेष व जितनी गुणित अधिक है उसका अनुमान इन अंकोंसे कदापि नहीं करना चाहिये। यहाँ तो सिर्फ एक मार्गणाके भीतर राशियोंकी परस्पर अधिकता या अल्पताका ही क्रम जाना जा सकता है। यद्यपि गणितके सूक्ष्म विचारसे यह वैषम्य भी संभवतः दूर किया जा सकता था, किन्तु उससे फिर संदृष्टियां

सुगम होनेकी अपेक्षा दुर्गम सी हो जाती, जिससे हमारा अभिप्राय पूर्ण नहीं होता । चूंकि यहाँ प्रत्येक मार्गणाके भीतर जीवराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशियां बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रमसे रखी गई हैं, उनके रुढक्रमसे नहीं । हां, सिध्द सर्वत्र अन्तकी ओर ही रखे हैं। कहीं कहीं राशिके जो अंक दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण विवक्षित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है । ऐसे स्थानोंपर अंकके आगे धनका चिन्ह+बना दिया गया है और देकर टिप्पणीमें उस विवक्षित राशिका उल्लेख कर दिया गया है । इस दिशामें यह प्रयत्न, जहाँ तक हमें ज्ञात है, प्रथम ही है । अतः सावधानी रखनेपर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। यदि पाठकोंके ध्यानमें आवें, तो हमें अवश्य सूचित करें ।